**موضوع الخطبة: كورونا-الداء والدواء**

**الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله**

**لغة الترجمة : الهندية**

**المترجم : فيض الرحمن التيمي**

**उपदेश का शीर्षक:**

**कोरोना- रोग एवं उपचार**

**प्रथम उपदेश:**

إن الحمد لله، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، ومن سيئات أعمالنا من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدًا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है। दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त (नवाचार) हैं और प्रत्येक बिदअ़त (नवोन्मेष) गुमराही है और हर गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ )

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا )

( يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا)

* , eqlyekuks vYykg dk rd+ok viukvks vkSj mLls Mjrs jgksAmldh vkKk dkjh djks vkSj mlds voKk ls cpks vkSj tkuyks fd vYykg vius nklksa ij tks Hkh vPNkbZ o cwjkbZ][kq”kgkyh o raxgkyh djrk gS]og izke”kZ ij vk/kkfjr gksrk gS]mu izke”kksZa esa ls ;g Hkh gS fd vkKk djus vkSj vokKk ls cpus esa og fdruk /kS;Z ls dke ysrs gSa]mudh vkt+ekbZ”k],oa vYykg rvk+yk mu ij tku o eky ,oa Qy vkSj [kk| dh deh ns dj ds muds /kS;Z dks vkt+ekrk gS]vYykg dk dFku gS%

(وَنَبْلُوكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ)

vFkkZr% ge rqe esa ls izR;sd dks cqjkb o HkykbZ nsdj vkt+ekrs gSa vkSj rqe lc gekjs gh vksj ykSV ds vkvksxsA

अर्थात: हम धनी एवं गरीबी, प्रतिष्ठा व अपमानिता, जीव एवं मृत्यु, स्वास्थ्य एवं रोग और महामारी व शांति के माध्यम से तुम्हारी परीक्षा लेते हैं, ताकि हमें यह ज्ञात हो सके कि तुम में से कौन शुभ कार्य करता है और कौन पापों में लत-पत रहता है एवं इस भाग्य से अल्लाह का क्या उद्देश है उससे लापरवाह रहता है.

ए मोमिनो! यह आवरण नहीं कि वर्तमान काल में अल्लाह तआला ने संपूर्ण मनुष्यों पर जो महामारीयां अवतरित की हैं उनमें से एक महान रोग "करोना" की महामारी है. यह ऐसी महामारी है जिसके कारण लोगों के जीवन की दिनचर्या नष्ट हो गई उनकी मृत्यु हुई, मनुष्य के धन एवं जीवन को घाटा हुआ. इसलिए बुद्धिमान मुसलमानों को चाहिए कि वे.इससे कुछ सीख एवं पाठ प्राप्त करें क्योंकि यह महामारी ऐसे ही बिना किसी कारण के अवतरित नहीं हुई है अल्लाह इससे मुक्ति है. बल्कि अल्लाह ने महान बुद्धिमत्ता के कारण इसे अवतरित किया जिसे अल्लाह ने क़ुरआन में अनेक स्थानों पर वर्णन किया है, और वह यह है कि लोग पापों एवं अवज्ञाओं में समा चुके हैं, इस कारणवश अल्लाह ने उन्हें संसार में ही उदाहरण स्वरूप उनके कार्यों का बदला दिखा दिया ताकि वे उन कार्यों को छोड़ दें जिनके कारण उनके जीवन में उथल-पुथल हो रही है ताकि उनकी स्थिति अच्छी हो जाए और वे सीधे मार्ग पर आ जाएं. अल्लाह का कथन है:

(ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ)

अर्थात: " धरती एवं समुद्र में मनुष्य की एक रण आत्मक कार्यो के कारण भ्रष्टाचार फैल गया है इसलिए कि अल्लाह ताला उन्हें उनके दुष्ट कर्मों का फल चखा दे, हो सकता है वह सुधर जाएं."

(وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ)

अर्थात: तुम्हें जो कुछ कठिनाइयां पहुंचती हैं वह तुम्हारे अपने ही कर्मों का फल है एवं वह तो बहुत सारी बातों को क्षमा कर देता है.

ज्ञात हुआ कि इस सामान्य महामारी का कारण यही अभद्रता एवं अवज्ञा है, जबकि अवज्ञाकारी मनुष्य बिना किसी भय के इन दृश्यों को प्रदर्शन कर रहा है, पत्रकारिता भ्रष्ट है, उसकी है इसके अंदर नाच-गाने, बुराई, दीन एवं दीन के आज्ञाकार्यों का मज़ाक़ उड़ाना सामान्य बात हो चुकी है. यहां तक कि रमाज़ान में भी इससे बचा नहीं जाता है, ब्याजी व्यापार एक सामान्य बात हो चुकी है जिसे बुराई व भ्रष्ट तक नहीं समझा जाता है. व्यापारीक स्थानो एवं बाजारों में नग्नता, नंगापन पुरुषों एवं महिलाओं का मिलाप अपनी चोटी पर है. महिलाएं आवरण के प्रति लापरवाही कर रही हैं उत्तेजक नक़ाबों की तो चर्चा ही न करें, जो चमकीली एवं अनंत तंग होते हैं. नमाज़ के समय में सोए रहना, मस्जिदों से दूरी अपनाना नमाज़ों के समय में क्रिय-विक्रय करने में मगन रहना ऐसे कार्य हैं जिन पर जितनी भी निंदा की जाए कम है. तो क्या इन पापों के पश्चात भी हम हमारी का अवतरित होना कोई चौंका देने वाली बात है??

⚫ अल्लाह के दासो! अल्लाह तआला जिन बुद्धिमत्ता ओं के कारण रोगों एवं महामारियों को अवतरित करता है उन में यह भी सम्मिलित है कि दास के हृदय का संबंध अल्लाह से हो जाए. वह याद रखें कि जिस आशीर्वाद एवं धन से लाभ उठा रहे हैं वह अल्लाह तआला का दिया हुआ निर्वाह है जिन्हें अल्लाह तआला किसी भी क्षण में पलट सकता है इस को याद करके दास अल्लाह की आज्ञा का पालन करता है एवं अवज्ञा से दूर रहता है ताकि उसका आशीर्वाद नष्ट ना हो. क्योंकि जब आशीर्वाद पर आभार व्यक्त किया जाता है तो वह सुरक्षित रहते हैं अन्यथा वह नष्ट एवं बर्बाद हो जाते हैं.

⚫ रोबोट एवं महा मारियो को प्रकट करने में अल्लाह की एक बुद्धिमत्ता यह भी होती है कि इसके माध्यम से लापरवाह एवं अवज्ञाकार तो अनुस्मारक कराई जाती है ताकि वे अपने पालनहार की ओर पलटा अपने बनाने वाले से क्षमा चाहे और यह ज्ञात रखे कि उनका पालनहार जो उनकी देख-रेख कर रहा है, वह पापों के कारण दंडित करता है.अल्लाह का कथन है:

(وَبَلَوْنَاهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ)

अर्थात: " हम उन्हें समृद्धियों एवं कठिनाइयों के माध्यम से परीक्षा लेते हैं हो सकता है वह दूरी अपना लें."

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला का कथन है:

(فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا)

अर्थात: " जब उनको हमारा दंड पहुंचा था तो वे नम्र क्यों नहीं हुए? "

⚫ इस महामारी के पीछे अल्लाह तआला की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि कुछ अवज्ञाकार दासों के हृदय की कठोरता बेनक़ाब हो गई जो इस महामारी के युग में भी पापों में लत-पत रहे शैतान उनके लिए अवज्ञाओं को सुंदरता के साथ प्रस्तुत करता रहा यहां तक कि वह गुमान करने लगा कि वह पूर्ण का कार्य कर रहा है, एवं संसार के उथल-पुथल एवं कठिनाइयों में गिर जाने में उनके कर्मों का कोई योगदान नहीं है इन अवज्ञाओं एवं लापरवाहीयों के बावजूद अल्लाह तआला परीक्षा लेने के लिए उन्हें कुछ देता है एवं आशीर्वाद के द्वार खोल देता है ताकि वे अकस्मात पकड़ में आ जाएं. अल्लाह का कथन है:

(سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ)

अर्थात: " हम इस प्रकार उन्हें धीरे-धीरे खींहचेंगे कि उन्हें ज्ञात भी नहीं होगा मैं उन्हें ढील दूंगा नि: संदेह मेरा उपाय बहुत शक्तिशाली है."

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

(فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّى إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً فَإِذَا هُمْ مُبْلِسُونَ)

अर्थात: " जब उन्होंने इस संदेश को ठुकरा दिया तो हमने उन पर हर प्रकार के द्वार खोल दिए यहां तक कि जब उन चीजों से जो उनको प्रदान की गई थी अधिक प्रसन्न हो गए तो हमने उनको अकस्मात दबोच लिया और वे उस समय निराश होकर रह गए. "

(وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ حَتَّى إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ)

अर्थात: हमने उन्हें यातना में भी पकड़ लिया फिर भी यह लोग अपने पालनहार के समक्ष झुके और ना ही नम्रता को अपनाया यहां तक कि जब हमने उन पर कठिन यातना का द्वार खोल दिया तो उसी समय तुरंत ही वे निराश हो गए.

अर्थात: वे अल्लाह की कृपा से निराश हो गए.

* रोगों एवं महामारयों के अवतरित करने में अल्लाह की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि उन पर धीरज एवं परिणाम की गणना करने वालों एवं (अल्लाह के भाग्य) पर अपनी सहमति दिखाने एवं घबराहट से दूर रहने वालों के लिए पूण्य संकलन होते हैं. नबी सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम का वर्णन है:

" मोमिन की भी अजब परिस्थिति है! उसका पुण्य किसी भी स्थिति में नष्ट नहीं होता, यह उपहार मोमिन के अतिरिक्त किसी को भी प्राप्त नहीं. अगर उसे प्रसन्नता होती है तो वह आभारी होता है इसमें भी पूण्य है एवं जब उसको हानि पहुंचती है तो वह धीरज रखता है इसमें भी पूण्य है 1.(मुस्लिम :२९९)

अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हू से मर्वी है कि रसूल सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम ने फ़रमाया: " मोमिन पुरुष एवं मोमिन महिला का जीवन, संतान, एवं संपत्ति की परीक्षा होती रहती है यहां तक की जब वे मृत्यु के पश्चात अल्लाह से भेंट करते हैं तो उन पर कोई पाप नहीं रहता."

( इसे तिर्मीज़ी:२३९९ ने रिवायत किया है, एवं उल्लेख किए हुए शब्द इन्हीं के हैं, तिर्मीज़ी ने कहा है यह हदीस हसन है. इनके अतिरिक्त इस हदीस को अहमद:७८५९ ने भी रिवायत किया है देखें: अल-सिलसिला अल-सहीहा:२२८०)

* इस महामारी में अल्लाह की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि इस छोटे से महामारी से मनुष्य की दुर्बलता एवं विनम्रता दिख चुकी है, इसलिए यह गिरोह जो प्रगति एवं उन्नति, सभ्यता, प्रौद्योगिकी, अविष्कार एवं नए-नए खोज में एक महान स्थान पर है वह इस छोटी सी महामारी के समक्ष आश्चर्य पूर्वक अपनी दुर्बलता को प्रदर्शित करती है कितने ऐसे देश हैं जिनका दावा है कि (हमसे ज़्यादा शक्तिशाली कौन है?) लेकिन इस महामारी के समक्ष उनकी शक्ति दुर्बलता की ओर जाती दिखाई दी, दूसरों से लापरवाह होकर अपने में ही व्यस्त हो कर रह गए. अल्लाह तआला का सत्य वर्णन है:

(وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُمْ بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِنْ دَارِهِمْ حَتَّى يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ) अर्थात: " कुफ़्फ़ार को उनके कुफ़्र के बदले सदैव कोई न कोई कठोर यातना पहुंचती रहेगी या उनके गृहों के निकट प्रकट होती रहेगी जब तक कि अल्लाह का वचन आ पहुंचे. नि: संदेह अल्लाह अपने वचन के विरुद्ध कोई कार्य नहीं करता."

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

(فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنْبِهِ فَمِنْهُمْ مَنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُمْ مَنْ أَغْرَقْنَا وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ)

अर्थात: " फिर तो प्रत्येक को हमने उसके पाप की कठिनाई में दबोच लिया. उनमें से कुछ पर हमने पत्थरों की वर्षा की, उनमें से कुछ को शक्तिशाली कठोर ध्वनि ने पकड़ लिया, उनमें से कुछ को हमने धरती के भीतर धंसा दिया, एवं उनमें से कुछ को हमने डुबो दिया. अल्लाह तआला ऐसा नहीं कि उन पर अत्याचार करे बल्कि यही लोग अपनी प्राणों पर अत्याचार करते हैं."

अधिक फ़रमाया:

(وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطِرَتْ مَعِيشَتَهَا)

अर्थात: " हमने बहुत सारी वह बस्तियां नष्ट कर दी जो अपने विलासिता में इतराने लगी थी."

* ऐ मुसलमानो! आश्चर्यजनक बात यह है कि कुछ मनुष्य उम्मत को पहुंचने वाली इस महामारी को को केवल भौतिक कारण की ओर फेरते हैं, जैसे बायोटिक्स लेने या इस महामारी को उसके उत्पन्न होने के स्थान में घेरे रखने में आलस्यात्मिक का परिचय देना. और इस प्रकार के कारण वे मनुष्य दोहराते रहते हैं जो भाग्य पर विश्वास नहीं रखते हैं. इसमें कोई संदेह नहीं कि यह एक अधूरी भौतिकवादी सिद्धांत है और ज्ञान एवं विश्वास की कमी को दर्शाता है क्योंकि अल्लाह तआला ने ही इस महामारी को प्रकट किया और सिर्फ उसी के हस्त ने इसका समाप्त करना भी है क्या उन्होंने अल्लाह ताला के इस वर्णन को नहीं सुना:

(أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَى أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ َأَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَى أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا ضُحًى وَهُمْ يَلْعَبُونَ أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ)

अर्थात: " क्या फिर भी उन बच्चियों के बसने वाले इस बात से लापरवाह हो गए कि उन पर हमारी यातना रात्रि के समय आ पड़े जिस समय वे सोते हैं और क्या उन बस्तियों के बसने वाले इस बात से लापरवाह हो गए हैं कि उन पर हमारी यातना दिन चढ़ेया पड़े जिस समय कि वे अपने खेलों में व्यस्त हों. क्या वे अल्लाह की उस पकड़ से बेपरवाह हो गए? अल्लाह की पकड़ से उन मनुष्यों को छोड़कर जिन पर तबाही आ ही गई हो और कोई बेपरवाह नहीं होता."

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

(قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَى أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ انْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ)

अर्थात: " आप कहिए कि उस पर भी वही शक्ति रखता है कि तुम पर कोई यातना तुम्हारे ऊपर से भेज दे या तुम्हारे पैर के नीचे से या कि तुम को सामूहिक स्तर पर सब के बिच भिड़ंत करा दे और तुम को एक को दूसरे का युद्ध चखा दे आप देखिए तो सही हम किस तरह सिद्धांतों के अलग-अलग दृष्टिकोण को बयान करते हैं हो सकता है वह समझ जाएं."

* इस महामारी में अल्लाह की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि जिन लोगों को अल्लाह तआला ने मुस्लिम शासकों की आज्ञाकारिता करने, एकजुटता बचाए रखने, पंक्तियों को एकजुट रखने एवं शासक और प्रजा के बीच प्रेम बचाए रखने के कारण (इस महामारी ) से सुरक्षित रखा. जैसे गृहों में रहना, घूमने फिरने से दूर रहना, सावधानी कारणों एवं सुरक्षा पूर्वक उपायों और स्वास्थ संबंधी निर्देशों पर चलना, ताकि इस महामारी के शिकार ना हो. (इन कारणों से प्राप्त होने वाले) स्वास्थ्य एवं सुरक्षा में जो महान बुद्धिमत्ता थी वह सामने आ गई.
* अल्लाह के दासो! अल्लाह को याद रखो उसका भय अपनाओ एकांत एवं ग्रुप में उसकी निगरानी को बुद्धि जीवित रखो, किसी भी स्थिति में उससे लापरवाह मत हो उसकी अवज्ञा में लत-पत मत रहो, अल्लाह का कथन है:

(وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ)

अर्थात: " ज्ञात रखो कि अल्लाह तआला को तुम्हारे हृदय की बातों का ज्ञात है. तुम उससे डरते रहो

जिस ज़ात ने हमारे आस-पास के मनुष्यों के लिए इस महामारी का शिकार होना सुनिश्चित किया वह इस बात की भी शक्ति रखता है कि हमें भी उसके अंतर्गत ले ले. इसलिए पूर्णत: पापों से सत्य हृदय के साथ क्षमा मांगें. क्षमा ही इस महामारी से छुटकारा पाने की चाबी है. जैसा कि रिमाद के वर्ष सन १८ हिजरी में जब मनुष्य सूखे पन के शिकार हुए तो उमर रज़ि अल्लाहू अन्हों ने किया. वह लोगों के संग इसतिसक़ा की नमाज़ ( वह नमाज जिसके माध्यम से वर्षा की दुआ मांगी जाती है.) के लिए निकले और प्रार्थना की:

(اللهم ما نزل البلاء إلا بذنب، ولم يكشف إلا بتوبة، وهذه أيدينا إليك بالذنوب، ونواصينا إليك بالتوبة)

अर्थात: " हे अल्लाह पाप के कारण ही दु: ख प्रकट होते हैं, तौबा से ही वह दूर होते हैं हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तेरे द्वार में अपने हस्त उठाए हुए हैं और हमारे माथे तौबा के साथ तेरे द्वार पर झुके हुए हैं.

* अल्लाह ताला मुझे और आप को क़ुरआन की बरकत से मालामाल करें मुझे और आप सबको इसके श्लोकों और बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाह से लाभ पहुंचाए मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए एवं आप सभी के लिए प्रत्येक पाप से क्षमा मांगता हूं आप भी उस से क्षमा की प्रार्थना करें नि: संदेह क्षमा मांगने वालों को अधिक क्षमा देता है.

**f}rh; mins”k%**

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى‘ أما بعد:

, eqlyekuks!dksjksuk vkink o vU; egkekfj;ksa o nq’Vrkvksa ls cpus ds lkr egRoiquZ dkj.k ,oa lk/ku gSa%

izFke%vYykg ij fo”okl]bl dk eryc ;s gS fd vkinkvksa o nq’Vrkvksa ls cpus ds tks fgLlh dkj.k gSa]mudks viukus ds lkFk vYykg Ikj fo”okl j[kk tk,]vYykg dk dFku gS%

(وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ)

vFkkZr% tks O;fDr vYykg ij fo”okl djsxk vYykg mlds izfr iz;kIr gks tk,xkA

f}rh;% ;g tkUuk vkSj ekUuk fd bl vkink o vU; dfBukb;ksa dk ?kVuk vkSj mLls ladzfer gksuk vkSj bl ls lqjf{kr jguk lc vYykg dh rd+nhj ls gksrk gS];fn euq’; leLr vkarfjd ,oa बाह्य dkj.kksa dks viukys]vkSj vYykg rvk+yk us mldh rd+nhj esa ;g fy[kk gks fd og bl ls ladzfer gksds jgsxk rks og vOk”; bl ls ladzfer gksxk]vYykg dk dFku gS%

(وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ)

vFkkZr%;fn rqedks vYykg d’V igqapk, rks mlds vfrfjDr vkSj dksb mldks nwj djus okyk ughaA

r`rh;%vf/kd izkFkZuk djuk]vYykg dk dFku gS%

(أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ)

vFkkZr%D;k vYykg vius nkl ds fy, dkQh ugha\

bl vk;r ds vanj vYykg us nkl ds fy, leLr vkinkvksa ,oa nq’Vrkvksa ls viuh iz;kifr dks mldh iwth; fo’ks”u ls tksM+k gS] rks tks O;fDr vf/kd izkFkZuk djsxk mls vkink o nq’Vrk ls mruk gh vYykg dh iz;kfIr gkfly gksxhA

pkSFkk% vkink o nq’Vrk ls vYykg dh Izk;kfIr dks gkfly djus dk ,d dkj.k ;g gS fd lPps fny ls vYykg ij fo”okl j[kk tk,]bl dk eryc ;g gS fd vkink o nq’Vrk ls cpus ds fy, tk+gsjh dkj.kksa dks viukus ds lkFk fny ls vYykg ij fo”okl j[kk tk,]vYykg dk dFku gS%

(وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ)

vFkkZr%tks O;fDr vYykg ij fo”okl j[ksxk vYykg mlds fy, dkQh gkstk,xkA

ikapवाँ%vkink ,oa nq’Vrk ls vYykg dh Ikz;kfIr gkfly djus dk ,d dkj.k ;g gS fd iSxacj lYykgq vySgs oLkYye ij vf/kd ls vf/kd njwn Hkstk tk,]bldk izek.k ;g gS fd dv+c jftvYykgq vugq us vki lYykgq vySgs oLkYye ls dgk fd og vki ij vf/kd ls vf/kd njwn HkstSaxs ;gka rd fd mudh vf/kdrj izkFkuk njwn ls gh Hkjh gksxh rks vki us Qjek;k%^^vc ;g njwn rqEgkjs lkjs x+eksa ds fy, iz;kIr gksxk vkSj bLls rqEgkjs iki feVk fn, tk,saxs^^ 3 ( bls frjehth+ us2407 fjok;r fd;k gS vkSj vYckuh us glu dgk gSA)

NBk% vkink o nq’Vrk ls vYykg dh Izk;kfIr o lqj{kk izkIr djus dk ,d dkj.k ;g Hkh gS fd pk”r ds le; pkj jdv+r uekt+ vnk dh tk,]izR;sd nks jdv+r ij lyke Qsjk tk,]bldk izek.k gnhls d+qnlh esa vYykg dk dFku gS%

^^, euq ds larku!rqe fnu ds izkjaHk esa esjh iz”kalk ds fy, pkj jdv+rsa i<+k dj]esa iwjs fnu Hkj ds fy, rqEgkjs fy, dkQh gqaxkA^^

(bls frjehth 2407 us vcwnkmwn jftvYykgq vugq ls o.kZu fd;k gS vkSj vYckuh us bls lgh dgk gSA)

^^iwjs fnu ds fy, rqEgkjs fy, dkQh gqaxk^^dk eryc ;g gS fd iwjs fnu tks vkink,sa ,oa nq?kZVuk ?kVrs gSa]muls rqEgsa lqjf{kr j[kqaxkA

lkrवाँa%vkink o nq’Vrk ls vYykg dh iz;kfIr gkfly djus dk ,d dkj.k ;g Hkh gS fd lqCg o “kke ds vt+dkj dk ikyu fd;k tk,]ftu esa dqN dk mYys[k fuEufyf[kr esa gSa%

* Lkwjg v[+kykl o emqTk+rSu lqCg o “kke rhu rhu ckj i<+uk]bldk izek.k IkSxacj lYykgq vySgs oLkYye dh ;g g+nhl gS tks vki us vcnwYykg fcu [kkscSc fcu v+nh jftvYykgq vugq ls Qjek;k fd%

lqCg o “kke rhu ckj «قل هو الله أحد» «المعوذتين» :«قل أعوذ برب الفلق»«قل أعوذ برب الناس»

i<+ fy;k djks];g ^^lwjrsa^^ rqEgsa gj nq’Vrk ls cpk,saxha vkSj lqjf{kr j[ksaxha^^

( bls vcwnkmwn 5082 vkfn us o.kZu fd;k gS vkSj vYckuh us lgh dgk gSA)

* vcnwYykg fcu mej jftvYykgq vugqek Qjekrs gSa fd% jlwy lYykgq vySgs oLkYye lqCg o “kke bu izkFkZukvksa dks dHkh ugha NksM+rs Fks%

«اللهم إني أسألك العفو والعافية في الدنيا والآخرة اللهم إني أسألك العفو والعافية في ديني ودنياي وأهلي ومالي اللهم استر عوراتي وآمن روعاتي واحفظني من بين يدي ومن خلفي وعن يميني وعن شمالي ومن فوقي وأعوذ بك أن أغتال من تحتي»

^^, vYykg esa rq>ls nqu;k o vk[ksjr esa vkfQ;r dk lokyh gwa] , vYykg esa rq>ls vius nhu o nqu;k vkSj vius ifjokj o laifRr esa Nek ,oa vkfQ;r dk lokyh gwaa]esjs ,scksa dks fNik ns]nk,sa ck,sa]vkSj mij ls esjh lqqj{kk Qjek]vkSj esa rsjk “kj.k pkgrk gwa uhps ls uk”k fd;s tkus ls^^

( bls vcwnkmwn 5074 vkSj fbCus ektk 3871 us fjok;r fd;k gS vkSj vYckuh us lgh dgk gSA)

* “kke ds le; i<+h tkus okyh izkFkZukvksa esa ;g Hkh gS fd “kke <+yrs gh lwjg cd+jk ds var dh nks vk;rsa Ik<+h tk,sa]D;ksafd vki lYykgq vySgs oLkYye dh g+nhl gS%^^lqjg cd+jk ds var dh nks vk;rsa tks jkr esa i<+sxk]rks og nksuksa vk;rsa mlds fy, dkfQ gksaxh^^

( bls cks[kkjh 4008 vkSj eqfLye 807 us vcwnkmwn ls o.kZu fd;k gSA)

* Tkks izkFkZuk,sa ,d eqfLye O;fDr dks ?kj ls fudyus ds Ik”pkr ^^vYykg ds vkns”k ls^^lqjf{kr j[krh gSa]muesa ?kj ls fudyus ds Ik”pkr dh izkFkZuk Hkh gS]vul jftvYykgq vugq ls of.kZr gS fd jlwy lYykgq vySgs oLkYye us Qjek;k% tc euq’; ?kj ls fudys fQj dgs%

«بسم الله توكلت على الله لا حول ولا قوة إلا بالله»

^^vYykg ds uke ls fudy jgk gwa]esjk iwjk iwjk fo”okl vYykg gh ij gS]lEkLr “fDr vYykg gh dh vksj ls gS^^ rks vki us Qjek;k% ml le; dgk tkrk gS^^vFkkZr nsonwr dgrs gSa^^%vc rq>s fgnk;r ns nh xbZ]vkSj rw cpk fy;k x;k]^^;g lqu dj^^”kSrku mLls vyx gks tkrk gS]rks mLls nwljk “kSrku dgrk gS% rsjs gkFk ls vkneh dslS fudy x;k fd bls fgnk;r ns nh xbZ]mldh vksj ls dkQh djnh xbZ vkSj og ^^rsjh fxjQr vkSj rsjs paxqy ls ^^cpk fy;k x;k\^^

( bls vcwnkmwn 595 us fjok;r fd;k gS vkSj “kks,Sc vjrkmwr us ^^vyrkyhd+ vyk lksuus vfc nkmwn^^esa bls g+lu dgk gSA)

bu vt+dkj esa ;g Hkh gS fd losn vYykg ls vkfQ;r o lykefr ekaxh tk,s]vcw cdj सिद्दीक+ jftvYykgq vugq ls of.kZr gS fd iSxacj lYykgq vySgs oLkYye us Qjek;k%vYykg ls ikiksa dh {kek vkSj dfBukb;ksa vkSj xqejkfg;ksa ls vkfQ;r ekaxks D;ksafd bZeku o fo”okl j[kus ds Ik”pkr fdlh cans dks vkfQ;r vFkok “kkafr ls vPNk dksbZ pht ugha nh xbZ^^

( bls vcwnkmwn 3849 vkfn us fjok;r fd;k gS vkSj “kS[k “kks,Sc vjnkmwn us ^^vyrkyhd+ vyk lkssuus vfc दाऊद^^esa bls glu dgk gSA)

iSxacj lYykgq vySgs oLkYye nksvk,s dk+suwr esa ;g Hkh i<+k djrs Fks%

"وعافني فيمن عافيت"

vFkkZr% vkfQ;r iznku dj mu yksxksa esa “kkfey Qjek dj ftUgsa rw us vkfQ;r nh gSA

( bls vg+en 1@199 us of.kZr fd;k gS vkSj vyeqLun ds “kks/kdrkZvksa us g+nhl la[;k 1718 ds varxZr bls lg+h dgk gS)

blds vfrfjDr ;g Hkh izkFkZuk djrs Fks fd%

«اللهم إني أعوذ بك من زوال نعمتك، وتحول عافيتك، وفجاءة نقمتك، وجميع سخطك»

vFkkZr% , vYykg! esa rsjh user dh lekfIr ls]rsjs iznku dh gwbZ vkfQ;r dh lekfIr ls]rsjh vpkud ds ;kruk ls vkSj rsjs izR;sd izdkj ds dkzs/k ls rsjk “kj.k pkgrk gwaA

( bls eqfYle 2736 us vcnwYykg fcu mej jftvYykgq vugq ls fjok;r fd;k gSA)

chekfj;ksa ls iukg ekaxus ds fo”; esa tks vt+dkj gSa]mu esa vul jftvYykgq vugq dh gnhl Hkh gS fd iSxacj lYykgq vySgs oLkYye ;g izkFkZuk fd;k djrs Fks:

«اللهم إني أعوذ بك من البرص، والجنون، والجذام، ومن سيئ الأسقام»

vFkkZr% , vYykg! esa rsjk “kj.k pkgrk gqa dq’B ]ikxyiu]dks<+ vkSj leLr izdkj ds jksx ls^^

( bls vg+en 3@192 us fjok;r fd;k gS vkSj vyeqlun ds “kks/kdrkZvksa us dgk fd%bl dh lun lg+h eqfLye dh “krZ ij gSA)

* vkink o nq’Vrk ls izkfIr o j{kk ls lacaf/kr tks vt+dkj g+nhl esa vk, gSa]os cgqr vf/kd gSa]tks izkFkZuk dh iqLrdksa esa mYysf[kr gSa]tSls bCus rSfe;k dh iqLrd ^^vydfye vyrय्यc^^ ukSoh dh iqLrd^^vyvt+dkj^^vkSj d+g+rkuh dh iqLrd^^vyfgLu vyelfye^^ vkfnA

سبحان خالق كورونا ومرسِله على العباد يريهم كيف هم ضعفا

فيروس ليس يرى بالعين من صغر لكن بأكثر سكان الدنا عصفا

كم اقتصاد هوى من بعد رفعته وكم حراك على ذي الأرض قد وقفا

وعطل الناس عن سعي وعن سفر رهن البيوت كفُص لازم الصدفا

(أن لا مساس) شعار الناس من قلق كل يحاذر من لمس له تلفا

كم أمة أصبحت في عيشها شظفا كانت تبختر في نعمائها ترفا

حتى الحبيبان عن بعد سلامهما مثل الشحيح زوى الكفين والكتفا

سبحان خالق كورونا ومرسله مخوِّفا خلقه من بأسه أسفا

لعلهم أن يفيقوا بعد غفلتهم ويخلعوا الكبر والطغيان والأنفا

لعلهم أن يحسوا نعمة كفرت كم من نعيم نُسِي من طول ما ألفا

لعلنا أن نرى حلم الكريم بنا فلو يشاء بنا في لحظة خسفا

يا رب عجل بيسر بعد ما عسرت وافرج علينا فشهر الصوم قد أزفا

( ;g iafDr;ka Mk0 v+yh fcu ;g+;k vyg+द्दknh ds gSa]vYykg mUgsa vPNk cnyk nsA )

vFkkZr%ifo= gS og glrh ftl us dksjksuk dks iSnk fd;k vkSj canksa ds ikl Hkstk rkfd mUgsa ns[kk lds fd og fdrus fucZy gSaA,d ,slk fo’kk.kq tks ,ruk NksVk gS fd vka[kksa ls ns[kk Hkh ugha tk ldrk]fQj Hkh mlus lalkj ds vf/kdrj euq’;ksa dks >u>ksM+ dj j[k fn;kA fdrus gh ,ls vFkZO;oLFkk gSa tks c<+us ds Ik”pkr ?kV x,s]lalkj gh dh fdrus gh ,lh xfrfof?k;ka gSa tks Bgj xbZaA yksxksa us nkSM+ Hkkx vkSj ;k=k dks fuyafcr dj fn;k]os ?kjksa esa utjcan gksdj jgx, ftl izdkj eksrh vius lhi esa jgrk gSA Hk; ls yksxksa dk ;g izpyu cu x;k fd dksbZ fdlh dks u Nw,]gj fdlh dks ;g Mj yxk gqvk gS fd Nwus ls dgha mls gkuh u igwap tk,A dsrus gh ,ls leqnk; gSa ftudk thou rax vkSj dfBu gksx;k]tcfd og [kq”kgkyh esa ?keaMh vkSj ,s”k dk thou clj dj jgs FksA;gka rd fd nks izseh Hkh nwj ls gh ,d nwljs dks lyke djrs gSa]ml datwl ds tSlk tks vius gFkfy;ksa vkSj ckgksa dks [kjp djus ds Mj ls lesV dj j[krk gSAifo= gS og glfr ftl us dksjksuk dks iSnk fd;k vkSj mls canksa ds ikl Hkstk]rkfd og tho dks viuh idM+ vkSj djks/k ls Mjk ldsA”kk;n og xQyr ds Ik”pkr gks”k ds uk[kqu ysa vkSj ?keaM]gV/kjeh vkSj vgadkj dh pknj mrkj QsdsaA “kk;n fd og bl user dks eglwl dj ldsa ftl dh uk”kqdjh dh tkrh jgh gS]dsrus gh ,lh users gSa tks yacs vof/k rd izkIr jgus ds dkj.k Hkwyk nh xbZaA vk”kk gS fd ge vius izfr n;kyw o nkrk ikyugkj ds /kS;Z jwi ns[ksa];fn og pkgs rks iyd >idrs gh /kjrh esa /alk nsA , ikyugkj! dfBukbZ ds Ik”pkr QkSju gh gesa vklkuh iznku dj vkSj gekjh dfBukbZ;ksa dks nwj djns fd jetk+u dk eghuk fudV vk pwdk gSA

* , vYykg ds nklks! ;g egkekjh gekjs izk.kksa dks ds fy, [krjukd gS]og vfr rsth+ ls QSy jgk gS]fD;ksafd thou ,d user gS]vYykg us vius nklksa dks muds vkrekvksa ij vehu cuk;k gS]tSlk fd iSxacj lYykgq vySgs oLkYye dk dFku gS% ^^fulansg rqEgkjs izk.kksa dk rqEgkjs mij vf/kdkj gS^^

(bls vg+en 6@268 vkfn us g+t+jr vkb”kk jft+vYykgq vugk ls fjok;r fd;k gS vkSj vyeqLun ds “kks/kdrkZvksa us g+nhl la[;k 26308 ds varxZr bls g+lu dgk gS]bldk vly lghgSu esa vcw gkst+SQk jft+vYykgq vugq o vU; lg+kck dh jsok;r ls miyC/k gSA)

blds vfrfjDr ;g Hkh tku ysa&vYykg vki ij viuh d`ik vorfjr djs&fd vYykg rvk+yk us vidks ,d cM+h pht+ dk vkns”k fn;k gS]vYykg dk dFku gS%

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थात: "अल्लाह तआ़ला एवं उसके देवदूत उस पैग़ंबर पर रह़मत (कृपा) भेजते हैं ए विशवासियो! तुम भी उन पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजते रहा करो।"

पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:

अर्थात: " तुम्हारे पवित्र दिनों में से शुक्रवार का दिन है उसी दिन आदम (मनु) का जन्म हुआ उसी दिन उनकी रूह़ (आत्मा) निकाली गई उसी दिन सूर (तुरही) फूंका जाएगा 15(अर्थात तुरही दूसरी बार फूंका जाएगा माने वह तुरही है जिसमें इसरफ़ील फूंक मारेंगे, यह वह देवदूत हैं जिनको तुरही में फूंक लगाने का आदेश दिया गया है जिसके पश्चात समस्त जीव क़बरों से उठ खड़े हो जाएंगे।) उसी दिन चीख़ होगी। (अर्थात: जिससे सांसारिक जीवन के अंत में लोग मदहोश होकर गिर पड़ेंगे और समस्त जीव की मृत्यु हो जाएगी। यह मदहोशी उस समय उत्पन्न होगी जब lwj (तुरही) में सर्वप्रथम फूंक लगाया जाएगा ०२ फुंक के मध्य में ४० वर्षों का अंतर होगा।) इसीलिए उस दिन तुम लोग मुझ पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजा करो, क्योंकि तुम्हारा दुरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है।

(bls uslkbZ 1373]vcwदाऊद 1047]bCus ektk 1085] vkSj vg+en 4@8 us fjok;r fd;k gS vkSj vYckuh us lg+h vch दाऊद esa vkSj vyeqlun ds “kks/kdrkZvksa us g+nhl la[;k%16162 ds varxZr bls l+gh dgk g)

हे अल्लाह तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दया, कृपा एवं शांति भेज, तू उनके ख़ुलफ़ा (मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तराधिकारीयों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

gs vYykg! dfBukbZ;kW ikiksa ds dkj.k gh tUe ysrh gSa vkSj rkSck ds ek/;e ls gh nwj gksrh gSa]ge vius ikiksa dks Lohdkjrs gSa vkSj gekjs gkFk rsjs }kj esa mBs gw, gSa]gekjs lj rsjs }kj esa >qds gw,s gSa] gs vYykg! rw ge ls bl egkekjh dks nwj djns] fulansg ge eqLyeku gSaA

gs vYykg ftldk Hkh bl egkekjh ds dkj.k fu/ku gksx;k gS mu ij d`ik Qjek vkSj tks yksx bl ds dkj.k jksxkh gSa mudks LokLF; vkSj iw.; iznku dj! gs vYykg gesa jet+ku ulhc Qjek! gs vYykg gesa jet+ku ulhc Qjek! gs vYykg gesa jet+ku ulhc Qjek!

gs gekjs ikyugkj gesa nqu;k o vk[ksjr dh vPNkbZ iznku dj vkSj ujd dh ;kruk ls eqfDr iznku Qjek!

* سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين

**लेखक: माजिद बिन सुलेमान अलरसी**

१४ रजब १४४२ **हिजरी**

**जूबैल,सऊदी अरब**

**अनुवाद: फैज़ुर रह़मान हि़फज़ुर रह़मान तैमी**

binhifzurrahman@gmail.com